"राजर्षी शाहू महाराज वैज्ञानिक दृष्टिकोन के परिप्रेक्ष्य में"

प्रा. एस. ए. वनिरे हिंदी विभाग, न्यु कॉलेज, कोल्हापुर दूरभाष- 7840920044 Vaniresmita78@gmail.com

---

भूमिका:

मराठा भोसले राजवंश के राजा तथा कोल्हापुर भारतीय रियासतों के महाराजा राजर्षी शाहू महाराज, ज्योतिबा फुले जी के सत्यशोधक समाज के संरक्षक, नारी शिक्षा के प्रणेता, प्रवर्तक और 'वैज्ञानिक दृष्टिकोन' रखने वाले थे। उन्हें एक असल लोकतांत्रिक और सामाजिक सुधारक माना जाता था। कोल्हापुर रियासत राज्य के पहले महाराजा, महाराष्ट्र के इतिहास में एक असाधारण व्यक्ती थे। समाज सुधारक ज्योतिराव फुले से वे प्रेरित थे। अपने शासन काल में वे एक आदर्श नेता और सक्षम शासक थे। जो कई प्रगतिशील और पथभ्रष्ट गतिविधियों से जुड़े थे। उनका शासनकाल 1894 से 1922 तक था। अपने कार्यकाल में उन्होंने राज्य में निचली जाति के विषयों के कारण अथक रूप से काम किया। जाति और पन्थ के बावजूद सभी को प्राथमिक शिक्षा देना उनका एक महत्वपूर्ण कार्य रहा। कूट शब्द: शाहू महाराज दृष्टीकोन / उपयोग :

शाहू महाराज जी ने अपने राजपद का उपयोग सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक न्याय के लिए किया। उन्होंने सभी को निशुल्क शिक्षा, औद्योगिक, आर्थिक, खेती, क्रीडा, जलसिंचन इन क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। शाहू महाराज उच्चशिक्षित थे। राजकोट, धारवाड़ आदि स्थानो पर उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा संपन्न की थी। अपनी असल जवानी में उन्होंने युरोप देखा था। सार्वजनिक सभा, सत्यशोधक समाज आदि का उन्होंने गहरा अध्ययन किया था। जिस कारण चलते उनकी दृष्टि मूल रुप से वैज्ञानिक मानी जाती है। उन्हें अपनी परंपरा का अभिमान था। पर वें अनिष्ट रूढ़ि-परंपराओं के खिलाप थे। इसी वैज्ञानिक दृष्टि के कारण वे अनेक संकटो को पार करके एक सफल राजा बने। उनके जीवन की कुछ घटनाओं से प्रमाणित होता है कि, शाहू महाराज वैज्ञानिक दृष्टि रखनेवाले राजा थे।

शाहू महाराज बारह वर्ष के होने के पहले ही उनकी माँ का देहांत हुआ था। पिताजी ने दूसरी शादी की। जिसके कारण उन्हें सौतेलेपन का सामना करना पड़ा। पिताजी शराब पिते थे। परिणाम स्वरूप उनकी तबीयत बिगड़ती चली जा रही थी। बच्चों के होते हुए दूसरी शादी करना तथा मदयपान करना आदि दोनों बातों का उन्होंने विरोध किया था। उन्होंने दुसरी शादी नहीं की और नहीं शराब को कभी छुआ।

प्रधानाचार्य मॅकनॉक्टन, सी. एस. कॅडी, स्टुअर्ट मिटफोर्ड फ्रेजर आदि उच्चशिक्षित व्यक्तियों का मार्गदर्शन शाहू महाराज जी को आठ साल की उम्र में ही मिला। फ्रेजर इस आय. सी. एस. व्यक्ति के मार्गदर्शन में ही वे पले बढ़े थे। यह व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टि के थे जिसके कारण आठ साल की उम्र में शाहूजी में यह संस्कार अपने दिखाई देने लगे। उम्र ११ से 18 में उक्त संस्कार उन्हें मिल गए। राजकोट और धारवाड में उन्हें निर्देशन एक युरोपियन व्यक्ति ने किया था। जिसके कारण उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोन बढ़ता गया।

राज्य की जिम्मेदारी प्रधान पर छोडकर खुशहाली में जीवन व्यतित करना राजाओं की पुरानी परंपरा थी। शाहू महाराज जी ने इसे खंडित कर दिया। गद्दी पर आते ही उन्होंने देश-विदेश में कई स्थानों पर यात्राकार अध्ययन किया। शाहू महाराज जी ने अपने राज्य की व्यवस्था प्रधान को सौपकर निरीक्षण किया। यही निरीक्षण वैज्ञानिक दृष्टीकोन पनपने में सहाय्यक सिद्ध हूआ। राज्य पर जब प्लेग और अकाल का संकट आया तो उस समय उन्होंने जो निर्णय लिए वे उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोन का ही द्योतक है। अकाल में उन्होंने एक भी व्यक्ति को भूख से मरने नहीं दिया। प्लेग की महामारी में भी खास कक्ष का आयोजन किया। प्लेग निवारण में भी उन्होंने आधुनिक वैद्यकीय सुविधाओं का महत्व दिया।

फासेपारधी जमात को गुनाहगारी से दूर करने के लिए उन्होंने कई प्रयास किए। उन्होंने इसे समझ लिया था कि कुछ अभाव या कुछ परिस्थिति की वजह से भी व्यक्ति गुनाहकार बनता है। इन हालातों को ही अगर बदल दिया जाय, तो वह व्यक्ति गुनाहगार नही बन सकेगा। इसी विचार के उन्होंने फासेपारधी परिवारों को सोनाळी (कोल्हापुर के नजदीक का स्थान) की भूमि तोह्फे में दे दी। वहाँ वे परिवार जीवन व्यतित करे इसलिए उन्हें कुछ सुविधाएँ दी गई। उनके बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था कर दी गयी। उनकी बहू इंदूमती राणीसाहेब बारह साल की उम्र में ही विधवा बन चुकी थी। बहू को पढ़ाने का उन्होंने निर्णय लिया। इसी क्रांतिकारी निर्णय से उन्हें काफी लोगों का विरोध झेलना पड़ा| लेकिन इसकी चिंता न करते उन्होंने हुए उन्होने अपनी बहू को शिक्षा दी। इंदुमती देवी ने मॅट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की| शाहू महाराज ने उन्हें दिल्ली के मेडिकल कॉलेज में उच्च शिक्षा के लिए भेज दिया।

शाहू महाराज ने राधानगरी इलाके में बाँध बनवाने का संकल्प किया। जिसे बनवाने के लिए उन्होंने सार्वजनिक बांधकाम विभाग की ओर से सर्वेक्षण अहवाल बनवाया। विश्वेश्वर अय्या जैसे ख्यातनाम व्यक्ति से बातचीत की। कई अनेक

बड़े-बड़े इंजिनीयरों से बात की। आठ वर्ष तक काम चला| काफी सारी मुश्किले आयी। बहुत पैसे खर्च किए| युद्ध की वजह से थोड़ा काम रुका, जिसे छ. राजाराम महाराज जी ने पूरा किया।

भारतीय समाज पर अंधविश्वास का प्रभाव था। जिस कारण चलते समदर पर्यटन को धर्मबाह्य माना गया था। समदर पर्यटन करनेवालों को समाज से बाहर किया जाता या उन्हें दंड भूगताना पड़ता था। शाहू महाराज जी ने इसका विरोध किया और 17 मई, 1902 में अपने परिवार के साथ मुंबई से लंडन चले गए। 30 अगस्त 1902 को भारत लोटे। लौटने के बाद उन्होंने प्रायश्चित नहीं किया। इसके विपरित भवानी माता और अंबाबाई का दर्शन किया। उन्होंने महिलाओं को उनका हक, सम्मान किया। महिलाओं की शिक्षा को प्रेरित किया। अपनी बेटी राधाबाई के विवाह की स्मृति में पंचगंगा नदी पर बनाने गये बाँध को 'राधानगरी' नाम दिया। राधानगरी बाँध बनाने से पहले उसका शुभारंभ अपनी पत्नी लक्ष्मीबाई के हाथों से किया। जिस समाज महिलाओं को हीन समजा जाता था ऐसे समाज में उन्होंने एक बाँध का शुभारंभ एक महिला के हाथ से किया था। इस प्रसंग से उनका सुधारवादी दृष्टीकोन दिखाई देता है।

शाहू महाराज एक ऐसी महान व्यक्ती थे, जिन्होंने राजा होने के बावजूद समाज में शोषित, पीडित वर्गों के लिए काम करना शुरू किया। इस वर्ग के दर्द को न सिर्फ समझा, बल्कि उनकी समस्याओं को दूर करने का पूरा प्रयास भी किया। महिला तथा दलितों पर होनेवाले अन्याय को दूर करने का सफल प्रयास शाहू महाराज जी ने किया। वे समझ गये थे महिलाओं पर होनेवाले अन्याय, या अत्याचार, का मूल में उनकी अशिक्षा ही है। कोल्हापूर संस्थान में महिलाओं की शिक्षा विषयक निर्णय क्रांतिकारी ही था। उन्होंने कोल्हापूर के 'फिमेल ट्रेनिंग स्कूल' में रखमाबाई केळकर इस बुद्धीजीवी महिला की नियुक्ती कर दी। रखमाबाई मे महिलाओं की शिक्षा को गति देने का प्रशंसनीय कार्य किया| कोल्हापुर संस्थान मे महिलाओं के लिए पाठशालाए पहले से ही थी। किंतु महाराज के काल में भुदरगड जैसे पिछडे प्रदेश में भी महिलाओं के लिए पाठशालाएँ बनायी गयी। लड़कीयों को पाठशाला में आने के लिए प्रेरित किया जाता था। लड़कों की पाठशालाओं में पढ़नेवाली लड़कीयाँ अगर अधिक नंबर से पास हो जाए तो वहाँ के अध्यापकों को इनाम दिया जाता था। प्रौढ स्त्रीशिक्षा पर भी उन्होंने अपना विशेष ध्यान केंद्रित किया था। पिछडी जाति की महिलाएँ स्त्रिया अगर शिक्षा प्राप्त करना चाहे तो, उनके लिए महाराज ने एक विशेष गॅझेट पास किया था। जिसके अनुसार इन महिलाओं को रहने और भोजन की व्यवस्था दरबार की ओर से की जाती थी।

निष्कर्ष:

शाहू महाराज ने कुछ पाश्चात्य मूल्यों का स्वीकार किया। उनकी आधुनिकता को उन्होंने स्वीकार किया था, लेकिन उनकी सभी बाते उन्होने स्वीकार नहीं की थी। वैसे ही कुछ भारतीय अनिष्ठ रूढी-परंपराओं को अस्वीकार किया था। लेकिन, सभी भारतीय मूल्यों को अस्वीकार नहीं किया। उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोन विवेकशील था। उक्त प्रसंगों से शाहू महाराज जी का वैज्ञानिक दृष्टिकोन दिखाई देता है। अंधविश्वास रूढी- परंपरा, अनिष्ठ प्रथाओं आदि से पूरी तरह पथभ्रष्ट हुए समाज को उन्होंने एक नई दृष्टि प्रदान कर दी। समाज को सही रास्ता दिखाया| स्वयं प्रयास से विरोध को अपनाकर उन्होंने समाज में अपने कार्य से वैज्ञानिक दृष्टीकोन का निर्माण किया। आत: लोगों को उनके हक के लिए प्रेरित किया।

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ. जयसिंगराव पवार - राजर्षी शाहू स्मारक ग्रंथ, महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधिनी, कोल्हापूर 2009.
2. प्रा. कमलाकर दीक्षित - विज्ञानाचा समाजधारणेवरील परिणाम, (अनुवाद) समाज प्रबोधन संस्था, पुणे 1964
3. कृ. गो. सूर्यवंशी - राजर्षी शाहू : राजा व माणूस, ठोकर प्रकाशन, पुणे १९८४.
4. The Impact of science on Society: Bertrand Russell, Blackie and son (India) Ltd. Bombay, 1952.
5. The Riss of scientific Philosophy: Hand Reichenbach, university of California Press London, 1951